ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(3): 132-137
www.allresearchjournal.com
Received: 01-01-2024
Accepted: 05-02-2024

वैशाली सिंह
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

डॉ. रेणु कंसल
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
वैशाली सिंह
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

हरियाणा राज्य के 11वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर नैतिक मूल्यों, आत्म–अवधारणा के प्रभावों का अध्ययन

वैशाली सिंह, डॉ. रेणु कंसल

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2024.v10.i3b.12129

सारांश
यह शोध पत्र हरियाणा राज्य के कक्षा 11वीं के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर नैतिक मूल्यों, आत्म–अवधारणा के प्रभावों का विश्लेषण करता है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि ये महत्वपूर्ण कारक– नैतिक मूल्य और आत्म–अवधारणा। किस प्रकार छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं और उनके समग्र मानसिक, सामाजिक और शैक्षिक विकास में क्या भूमिका निभाते हैं। वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य में, जहां शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छे अंकों की प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों के सर्वांगीण विकास पर भी बल दिया जाता है, यह शोध उन गहन कारकों पर प्रकाश डालता है, जो न केवल छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन को दिशा देते हैं बल्कि उनके मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करते हैं। नैतिक मूल्य, जैसे ईमानदारी, जिम्मेदारी, सहानुभूति और आत्म–अनुशासन, छात्रों की शैक्षणिक सफलता के महत्वपूर्ण आधार होते हैं। जब छात्रों में ये मूल्य प्रबल होते हैं, तो वे शैक्षिक चुनौतियों का अधिक आत्मविश्वास और समर्पण के साथ सामना कर पाते हैं। नैतिक मूल्यों का शिक्षण छात्रों के भीतर एक अनुशासित और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है, जिससे वे न केवल शैक्षणिक कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं, बल्कि सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक भी बनते हैं। इसके विपरीत, जिन छात्रों में नैतिक मूल्यों की कमी होती है, वे शिक्षा को केवल एक आवश्यक कर्तव्य के रूप में देखते हैं, जिससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन कमजोर होता है। इस शोध पत्र में यह भी पाया गया कि नैतिक शिक्षा का प्रभाव छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी होता है।

कूटशब्दः शैक्षणिक उपलब्धि, नैतिक मूल्य, आत्म–अवधारणा, शिक्षा, शैक्षणिक चिन्ता

प्रस्तावना
जो छात्र नैतिक दृष्टि से मजबूत होते हैं, वे शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन में अधिक आत्म–संतुष्टि महसूस करते हैं और तनाव से बचने में सक्षम होते हैं। आत्म–अवधारणा, जो यह निर्धारित करती है कि छात्र खुद को किस प्रकार देखते हैं और अपनी क्षमताओं पर कितना विश्वास करते हैं, छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर गहरा प्रभाव डालती है। जिन छात्रों की आत्म–अवधारणा सकारात्मक होती है, वे शैक्षणिक चुनौतियों को एक अवसर के रूप में देखते हैं और उनमें अधिक आत्मविश्वास और धैर्य के साथ उनका सामना करते हैं। ऐसे छात्र कठिनाइयों से डरते नहीं हैं, बल्कि उन्हें अपने विकास का एक हिस्सा मानते हैं। इसके विपरीत, जिन छात्रों की आत्म–अवधारणा कमजोर होती है, वे अपने भीतर आत्म–संदेह, असुरक्षा और असफलता का भय महसूस करते हैं, जिससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। आत्म–अवधारणा का प्रभाव छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी होता है। जो छात्र अपने बारे में सकारात्मक सोचते हैं, वे कम शैक्षणिक चिंता और तनाव महसूस करते हैं। यह शोध यह भी बताता है कि आत्म–अवधारणा और शैक्षणिक चिंता के बीच नकारात्मक सहसंबंध होता है, जिसका अर्थ यह है कि सकारात्मक आत्म–अवधारणा वाले छात्र कम चिंता महसूस करते हैं और उनके शैक्षणिक परिणाम बेहतर होते हैं। शैक्षणिक चिंता, विशेष रूप से परीक्षा के समय उत्पन्न होने वाला तनाव, छात्रों के शैक्षणिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस शोध पत्र में पाया गया कि अत्यधिक शैक्षणिक चिंता का छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जो छात्र अत्यधिक शैक्षणिक चिंता महसूस करते हैं, वे अपनी परीक्षाओं और शैक्षणिक कार्यों के बारे में अधिक घबराए रहते हैं, जिससे उनकी एकाग्रता और स्मरण शक्ति प्रभावित होती है। यह चिंता छात्रों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है, जिससे उनकी शैक्षणिक प्रगति में बाधा उत्पन्न होती है। इसके विपरीत, जिन छात्रों में शैक्षणिक चिंता का स्तर कम होता है, वे शैक्षणिक चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना करते हैं और उनका शैक्षिक प्रदर्शन

बेहतर होता है। शैक्षणिक चिंता के प्रभाव को कम करने के लिए छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य समर्थन की आवश्यकता होती है, ताकि वे अपने तनाव का प्रबंधन कर सकें और शैक्षिक चुनौतियों का सामना कर सकें। शोध के अनुसार, नैतिक मूल्य, आत्म–अवधारणा और शैक्षणिक चिंता के बीच आपसी संबंध होता है, जो छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को सामूहिक रूप से प्रभावित करता है। जिन छात्रों के नैतिक मूल्य उच्च होते हैं और आत्म–अवधारणा सकारात्मक होती है, वे शैक्षणिक चिंता को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर पाते हैं, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर होता है। इसके अलावा, शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों के अनुभवों में भी भिन्नताएं देखी गईं। शहरी क्षेत्रों के छात्रों को बेहतर शैक्षणिक संसाधनों और अवसरों की पहुंच होती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों को शैक्षणिक संसाधनों की सीमित पहुंच के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। फिर भी, दोनों प्रकार के छात्र शिक्षा को अपने जीवन में प्रगति का साधन मानते हैं और इसके महत्व को समझते हैं। यह शोध पत्र शैक्षिक नीतियों और सुधारों के लिए उपयोगी हो सकता है, जिससे छात्रों के समग्र मानसिक, शैक्षणिक और सामाजिक विकास को प्रोत्साहित किया जा सके।

साहित्य समीक्षा

पटेल (2020) द्वारा किए गए छात्रों के स्वयं के सीखने के प्रति उनके दृष्टिकोण, नैतिक और नैतिक पृष्ठभूमि से निकटता से जुड़े होते हैं, जो शैक्षिक पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को एकीकृत करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।[1] छात्रों के सीखने और शैक्षणिक सफलता के प्रति दृष्टिकोण को समझते समय नैतिक सिद्धांतों के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। ईमानदारी, जिम्मेदारी और सहानुभूति जैसे नैतिक मूल्य एक गतिशील सीखने के माहौल का निर्माण करते हैं और छात्रों की शैक्षिक गतिविधियों में उद्देश्य और दिशा की भावना को प्रेरित करते हैं।[2]

नैतिक मूल्यों और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंधों की खोज, कक्षा 11 वीं के छात्रों के समग्र विकास पर एक मूल्यवान दृष्टिकोण प्रदान करती है। इसी तरह, आत्म–अनुशासन की परीक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जो न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है बल्कि आत्म–सम्मान, आत्म–प्रेरणा और व्यक्तिगत विकास पर भी प्रभाव डालती है। सकारात्मक आत्म–अनुशासन छात्रों को आत्मविश्वास और नेतृत्व के साथ शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है, जिससे उनकी शैक्षणिक प्रगति प्रभावित होती है।[3] आत्म–अनुशासन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच की गतिशील परस्पर क्रिया पर जोर देकर, यह शोध पत्र उन अंतर्निहित प्रक्रियाओं को स्पष्ट करना चाहता है जो छात्रों की सफलता को प्रेरित करती हैं।[4] कार्टर और मिलर (2019) के अनुसार, आत्म–अनुशासन शैक्षणिक सफलता में एक महत्वपूर्ण निर्धारक है, क्योंकि यह छात्रों को अपने समय का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने और विकर्षणों को दूर करने में सक्षम बनाता है।[5]

नैतिक मूल्य

नैतिक मूल्य उन विश्वासों और व्यवहारों को संदर्भित करते हैं जो सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करते हैं, जैसे ईमानदारी, न्याय और निष्पक्षता। ये मूल्य छात्रों के व्यक्तिगत और शैक्षणिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शोध से पता चलता है कि जिन छात्रों में मजबूत नैतिक मूल्य होते हैं, वे शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं और अपने साथियों और शिक्षकों के साथ सकारात्मक संबंध बनाते हैं।[6] नैतिक शिक्षा जिम्मेदारी और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देती है, जैसा कि बर्कोविट्ज और बीयर (2005) द्वारा बताया गया है, जो इसके प्रोसोशल व्यवहार और समग्र छात्र विकास को बढ़ावा देने की भूमिका को उजागर करते हैं।[7]

आत्म–अनुशासन

आत्म–अनुशासन अपनी क्षमताओं और मूल्यों के साथ अपने कार्यों को संरेखित करने की क्षमता है। मिशेल (1972) जैसे शोध पत्रों से पता चला है कि आत्म–अनुशासन शैक्षणिक सफलता का एक प्रमुख भविष्यवक्ता है, जो छात्रों को ध्यान केंद्रित करने और विकर्षणों का विरोध करने की अनुमति देता है। इसके अलावा, डकवर्थ और अन्य (2005) ने पाया कि जिन छात्रों में आत्म–अनुशासन अधिक होता है, वे बेहतर समय प्रबंधन और निरंतर प्रयास के कारण अपने साथियों की तुलना में शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं।[8] यह अनुशासन तनाव को कम करने में भी मदद करता है, जिससे एक संतुलित जीवनशैली को बढ़ावा मिलता है, जैसा कि टैंगनी और अन्य (2004) द्वारा सुझाया गया है।[9]

हरियाणा का वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य

हरियाणा का वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य एक गतिशील और विविध संरचना को दर्शाता है, जिसमें विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थान शामिल हैं। राज्य में कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थान हैं, जैसे कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), कुरुक्षेत्र। ये संस्थान न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए जाने जाते हैं, बल्कि अनुसंधान और उद्योग के साथ मजबूत साझेदारी के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (कुमार, 2015)।[10] पिछले कुछ वर्षों में, हरियाणा के शैक्षिक क्षेत्र में तेजी से विस्तार हुआ है और निजी शैक्षणिक संस्थानों ने पेशेवर पाठ्यक्रम, डिग्री और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से इस बदलाव में महत्वपूर्ण योगदान दिया है (शर्मा, 2018)।[11]

सरकार द्वारा शुरू किए गए विभिन्न कार्यक्रम, जैसे 'सर्व शिक्षा अभियान' और 'राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान'। इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कार्य कर रहे हैं कि राज्य के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाना है, जिससे छात्रों का नामांकन बढ़ा है और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है (गुप्ता, 2020)।[12] इन प्रयासों ने हरियाणा में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर छात्रों के नामांकन और शिक्षण मानकों में महत्वपूर्ण वृद्धि की है। सरकार ने सरकारी विद्यालयों के बुनियादी ढांचे के विकास और शिक्षकों के प्रशिक्षण में भी बड़े पैमाने पर निवेश किया है।

तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी हरियाणा ने तेजी से प्रगति की है। राज्य के विभिन्न तकनीकी संस्थान इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और अन्य क्षेत्रों में उन्नत पाठ्यक्रम प्रदान कर रहे हैं। सरकार ने कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को प्राथमिकता दी है ताकि छात्रों को 21वीं सदी के कार्यबल के लिए तैयार किया जा सके (सिंह, 2019)।[13] इस उद्देश्य के लिए, राज्य में कई कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जो छात्रों को नवीनतम तकनीकों और उद्योग की मांगों के अनुसार प्रशिक्षित कर रहे हैं। इन उद्योग–अकादमिक साझेदारियों ने छात्रों को इंटर्नशिप और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से तकनीकी दक्षता और रोजगार की संभावना बढ़ाने में मदद की है (राय, 2021)।[14]

हरियाणा के शिक्षा परिदृश्य की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता डिजिटल शिक्षा का तेजी से विस्तार है। राज्य सरकार ने डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं, जिनका उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल

विभाजन को समाप्त करना है। इन प्रयासों में स्मार्ट क्लासरूम, ई–लर्निंग सामग्री और डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना शामिल है (वर्मा, 2022)।[15] कोविड–19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ गया था, जब ऑनलाइन शिक्षा आवश्यक बन गई थी। डिजिटल शिक्षा के इस विस्तार ने छात्रों को अधिक लचीली और सुलभ शिक्षा प्रदान की है, जिससे उनके शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार हो रहा है।

हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। राज्य सरकार ने विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए हैं, जो छात्रों को आधुनिक उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार तैयार करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। इन केंद्रों में आधुनिक उपकरण और तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिससे छात्रों को रोजगार के नए अवसर मिल रहे हैं। राज्य ने उद्योगों के साथ सहयोग करके इंटर्नशिप और व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी लागू किए हैं, जिससे छात्रों को उनके करियर के लिए आवश्यक व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो रहा है (शर्मा, 2018)।[16]

शोध डिजाइन

यह शोध अध्ययन वर्णनात्मक शोध डिजाइन पर आधारित है, जिसमें मिश्रित दृष्टिकोण (गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों) का उपयोग किया गया है। इसका उद्देश्य हरियाणा राज्य के 11वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर नैतिक मूल्यों, आत्म–अवधारणा और शैक्षणिक चिंता के प्रभावों का अध्ययन करना है। इस शोध प्रक्रिया में प्राथमिक डेटा संग्रह, संरचित प्रश्नावली और सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

शोध अध्ययन हरियाणा राज्य के सोनीपत और फरीदाबाद जिलों में किया गया। ये क्षेत्र चुने गए क्योंकि यहाँ के छात्र शैक्षणिक उपलब्धि और नैतिक मूल्यों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त हैं।

शोध चर

- स्वतंत्र चर : नैतिक मूल्य, आत्म–अवधारणा और शैक्षणिक चिंता।
- आश्रित चर : शैक्षणिक उपलब्धि।

नमूना और प्रक्रिया

शोध में 600 छात्रों (310 छात्र और 290 छात्राएँ) को शामिल किया गया। संभाव्यता और गैर–संभाव्यता नमूनाकरण विधियों का संयोजन कर नमूने का चयन किया गया। डेटा संग्रह के लिए गूगल फॉर्म आधारित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

शोध उपकरण

- नैतिक मूल्य प्रश्नावली : वैसी और नील (2014) द्वारा विकसित।
- स्व–अवधारणा प्रश्नावली : आर.के. सारस्वत।
- चिंता मापन प्रश्नावली : ए.के. सिन्हा और एल.एन.के. सिन्हा।
- शैक्षणिक उपलब्धि मापन : छात्रों के परीक्षा अंकों और ग्रेड का विश्लेषण।

डेटा विश्लेषण

सांख्यिकीय उपकरणों जैसे मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट और एनोवा का उपयोग कर डेटा का विश्लेषण किया गया। एसपीएसएस सॉफ्टवेयर से डेटा को व्यवस्थित और व्याख्यायित किया गया।

निष्कर्ष और रिपोर्टिंग

सर्वेक्षण डेटा का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला गया और सिफारिशें प्रस्तुत की गईं। इस शोध ने 11वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर नैतिक मूल्यों और आत्म–अवधारणा के प्रभाव को स्पष्ट किया।

अध्ययन क्षेत्र

यह शोध अध्ययन हरियाणा राज्य के सोनीपत व फरीदाबाद जिले पर केंद्रित है।

अध्ययन की जनसंख्या

यह अध्ययन हरियाणा राज्य के सोनीपत व फरीदाबाद के 11वीं कक्षा के छात्रों पर केंद्रित है। कुल 600 छात्रों को अध्ययन में शामिल किया गया है, जिनमें 310 छात्र और 290 छात्राएं हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण

अंत में, एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण एसपीएसएस जैसे सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर का उपयोग करके किया गया है। इस प्रक्रिया में आंकड़ों को व्यवस्थित रूप से जांचा गया और अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप आगे का विश्लेषण किया गया।

विश्वसनीयता विश्लेषण

निम्न तालिका के तहत जांच किए गए चरों के लिए किए गए विश्वसनीयता विश्लेषण के परिणाम प्रस्तुत करती है। नैतिक मूल्य, आत्म–अवधारणा, शैक्षणिक चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि सहित प्रत्येक चर में दस आइटम शामिल हैं। तालिका प्रत्येक चर के लिए गणना किए गए क्रोनबैक के अल्फा मानों को प्रदर्शित करती है, जो प्रत्येक निर्माण के भीतर आंतरिक स्थिरता के स्तर को दर्शाती है। जैसा कि नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है, सभी चर उत्कृष्ट विश्वसनीयता प्रदर्शित करते हैं, जहां क्रोनबैक के अल्फा मान 0.9 से अधिक हैं। विशेष रूप से, नैतिक मूल्यों, आत्म–अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि के लिए विश्वसनीयता गुणांक क्रमशः 0.909, 0.914 और 0.922 हैं। ये उच्च क्रोनबैक के अल्फा मान प्रत्येक चर के भीतर वस्तुओं के प्रति प्रतिक्रियाओं के बीच मजबूत सहमति को दर्शाते हैं, जो उनकी आंतरिक स्थिरता और विश्वसनीयता की पुष्टि करते हैं।

विश्वसनीयता विश्लेषण के ये परिणाम इस शोध पत्र में उपयोग किए गए माप उपकरणों की विश्वसनीयता और भरोसेमंदता को प्रमाणित करते हैं। सभी चरों के लिए स्थापित उत्कृष्ट विश्वसनीयता के साथ, सर्वेक्षण आइटम हरियाणा राज्य के 11वीं कक्षा के छात्रों के बीच नैतिक मूल्यों, आत्म–अवधारणा, शैक्षणिक चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि के इच्छित निर्माणों को प्रभावी ढंग से पकड़ते हैं। ये निष्कर्ष शोध पत्र के परिणामों की विश्वसनीयता और भरोसेमंदता को बढ़ाते हैं, जिससे आंकड़े के आगे के विश्लेषण और व्याख्या के लिए एक ठोस आधार तैयार होता है।

तालिका 1: विश्वसनीयता विश्लेषण

चर	प्रश्नों की संख्या	क्रोनबैक अल्फा का मान	विश्वसनीयता विश्लेषण
नैतिक मूल्य	10	0.909	उत्कृष्ट
स्व संकल्पना	10	0.914	उत्कृष्ट
शैक्षिक उपलब्धि	10	0.922	उत्कृष्ट

इस तालिका में नैतिक मूल्य, स्व संकल्पना और शैक्षिक उपलब्धि के लिए किए गए विश्वसनीयता विश्लेषण का सारांश प्रस्तुत किया गया है। सभी चरों के लिए क्रोनबैक अल्फा का मान 0.9 से अधिक है, जो उनकी उत्कृष्ट आंतरिक स्थिरता और विश्वसनीयता को दर्शाता है।

तालिका 2: नैतिक मूल्य की वर्णनात्मक सांख्यिकी

प्रश्न	कुल	माध्य	मानक विचलन	अंतर
1. शैक्षणिक सफलता के लिए नैतिक मानकों को कायम रखना आवश्यक है।	600	4.048	1.086	1.181
2. दूसरों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने से शैक्षणिक समुदाय में वृद्धि होती है।	600	4.053	0.985	0.972
3. मैं शैक्षणिक परियोजनाओं में टीमवर्क और सहयोग के मूल्य में विश्वास करता हूँ।	600	4.111	0.947	0.897
4. अपने कार्यों के प्रति जिम्मेदार होना मेरे शैक्षणिक मूल्यों का एक प्रमुख पहलू है।	600	4.138	1.0822	1.171
5. मैं शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करते हुए भी नैतिक आचरण बनाए रखने का प्रयास करता हूँ।	600	3.920	1.088	1.186
6. मैं अकादमिक सेटिंग में दूसरों की राय और दृष्टिकोण का सम्मान करना महत्वपूर्ण मानता हूँ।	600	4.096	1.122	1.259
7. मैं शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और साहित्यिक चोरी या धोखाधड़ी से बचने के लिए प्रतिबद्ध हूँ।	600	3.458	0.886	0.786
8. मैं अपने शैक्षणिक जीवन के सभी पहलुओं में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा में विश्वास करता हूँ।	600	3.626	0.997	0.996
9. नैतिक मूल्यों को कायम रखने से मेरे शैक्षणिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।	600	3.673	1.040	1.082
10. मैं शैक्षणिक वातावरण में निष्पक्षता और न्याय को महत्व देता हूँ।	600	3.733	1.008	1.017

इस तालिका में नैतिक मूल्यों के संबंध में सर्वेक्षण किए गए कक्षा 11 वीं के छात्रों के उत्तरों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक प्रश्न के लिए माध्य, मानक विचलन और उत्तरों के बीच श्रेणी को दिखाया गया है।

कुल मिलाकर तालिका में नैतिक मूल्यों के विभिन्न पहलुओं पर हरियाणा राज्य के कक्षा 11 वीं के 600 छात्रों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है। ''शैक्षणिक सफलता के लिए नैतिक मानकों को कायम रखना आवश्यक है'' वाले कथन का माध्य 4. 048 है, जो यह संकेत करता है कि अधिकांश छात्र नैतिकता को शैक्षणिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। इसी प्रकार, ''दूसरों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने से शैक्षणिक समुदाय में वृद्धि होती है'' के लिए माध्य 4.053 है, जो दर्शाता है कि छात्रों ने सहानुभूति को महत्वपूर्ण माना। टीमवर्क और सहयोग के मूल्य में विश्वास से जुड़े कथन का माध्य 4.111 है, जो दर्शाता है कि छात्रों ने इसे उच्च प्राथमिकता दी है।

''अपने कार्यों के प्रति जिम्मेदार होना'' भी छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है, जिसका माध्य 4.138 है। वहीं, नैतिक आचरण बनाए रखने के प्रयास का माध्य 3.920 है, जो थोड़ा कम है। ''शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और साहित्यिक चोरी से बचने'' का माध्य 3.458 है, जो यह दर्शाता है कि इसमें थोड़ी कम सहमति है। हालांकि, ''ईमानदारी और सत्यनिष्ठा में विश्वास'' और ''शैक्षणिक वातावरण में निष्पक्षता और न्याय को महत्व देना'' वाले कथनों का माध्य क्रमशः 3.626 और 3.733 है, जो यह संकेत करता है कि छात्र इन मूल्यों को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। मानक विचलन के अनुसार, अधिकांश प्रश्नों में उत्तरों में अधिकतर समानता थी, विशेषकर टीमवर्क, सहानुभूति और जिम्मेदारी के पहलुओं में।

तालिका 3: स्व संकल्पना की वर्णनात्मक सांख्यिकी

	प्रश्न	कुल	माध्य	मानक विचलन	अंतर
1.	एक शिक्षार्थी के रूप में मेरे पास अपने बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण है।	600	3.721	1.093	1.196
2.	मेरा मानना है कि मैं प्रयास और दृढ़ता से शैक्षणिक चुनौतियों पर काबू पा सकता हूँ।	600	3.685	1.052	1.108
3.	मुझे अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों पर गर्व है।	600	3.508	1.100	1.212
4.	मैं अपने शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्वयं को सक्षम मानता हूँ।	600	3.533	1.139	1.298
5.	एक छात्र के रूप में, मुझे अपनी ताकत और कमजोरियों की स्पष्ट समझ है।	600	3.953	1.126	1.270
6.	मैं शैक्षणिक रूप से सफल होने के लिए प्रेरित महसूस करता हूँ।	600	3.811	1.176	1.385
7.	मुझे अपनी सीखने और शैक्षणिक रूप से आगे बढ़ने की क्षमता पर विश्वास है।	600	3.945	1.063	1.131
8.	शैक्षणिक परिवेश में, मैं अपने विचार और राय व्यक्त करने में आश्वस्त हूँ।	600	4.031	0.980	0.962
9.	जब मुझे शैक्षणिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो मैं मदद या समर्थन लेने में सहज महसूस करता हूँ।	600	3.993	1.108	1.229

इस तालिका में स्व संकल्पना के संबंध में सर्वेक्षण किए गए कक्षा 11 वीं के छात्रों के उत्तरों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक प्रश्न के लिए माध्य, मानक विचलन और उत्तरों के बीच श्रेणी को दिखाया गया है।

तालिका में प्रस्तुत स्व संकल्पना की वर्णनात्मक सांख्यिकी से पता चलता है कि हरियाणा राज्य के कक्षा 11 वीं के छात्रों के शैक्षणिक आत्म–धारणा के विभिन्न पहलुओं में सामान्य रूप से सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया है। ''एक शिक्षार्थी के रूप में मेरे पास अपने बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण है'' वाले कथन का माध्य 3.721 है, जो दर्शाता है कि अधिकांश छात्र अपने बारे में सकारात्मक सोच रखते हैं। इसी तरह, ''मेरा मानना है कि मैं प्रयास और दृढ़ता से शैक्षणिक चुनौतियों पर काबू पा सकता हूँ'' का माध्य 3.685 है, जो छात्रों की आत्म–विश्वास को दर्शाता है। हालांकि, ''मुझे अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों पर गर्व है'' और ''मैं अपने शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्वयं को सक्षम मानता हूँ'' जैसे बयानों में थोड़ा कम सकारात्मकता (माध्य क्रमशः 3.508 और 3.533) दिखाई देती है, लेकिन अधिकांश छात्र अपनी क्षमताओं के प्रति विश्वास रखते हैं। उच्चतम माध्य 4.031 ''शैक्षणिक परिवेश में, मैं अपने विचार और राय व्यक्त करने में आश्वस्त हूँ'' के लिए दर्ज किया गया, जो बताता है कि छात्र अपने विचारों को व्यक्त करने में आत्मविश्वास महसूस करते हैं। इसके अलावा, ''जब मुझे शैक्षणिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो मैं मदद या समर्थन लेने में सहज महसूस करता हूँ'' का माध्य 3.993 है, जो यह संकेत करता है कि छात्रों को मदद लेने में संकोच नहीं होता। मानक विचलन के आधार पर, अधिकांश उत्तरों में विविधता कम थी, जिसका अर्थ है कि अधिकांश छात्रों की प्रतिक्रियाएं समान थीं।

तालिका 4: शैक्षिक उपलब्धि की वर्णनात्मक सांख्यिकी

प्रश्न	कुल	माध्य	मानक विचलन	अंतर
1. मैं अपने वर्तमान शैक्षणिक प्रदर्शन से संतुष्ट हूँ।	600	4.0433	1.04560	1.093
2. मेरी शैक्षणिक उपलब्धियां मेरे प्रयासों और क्षमताओं को प्रतिबिंबित करती हैं।	600	4.0200	0.96669	0.934
3. मैं अकादमिक उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने हेतु प्रेरित महसूस करता हूँ।	600	4.0633	0.96309	0.928
4. मैं अपने लिए शैक्षणिक रूप से चुनौतीपूर्ण लक्ष्य निर्धारित करता हूँ और उन्हें प्राप्त करने के लिए काम करता हूँ।	600	4.0167	0.99903	0.998
5. मुझे अपने शैक्षणिक प्रदर्शन के संबंध में शिक्षकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है।	600	4.0350	1.02577	1.052
6. मैं अपनी शिक्षा को बढ़ाने के लिए कक्षा चर्चाओं और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता हूँ।	600	4.1600	0.94298	0.889
7. मैं नियमित रूप से अपने शैक्षणिक कौशल और ज्ञान को सुधारने के अवसर तलाशता रहता हूँ।	600	4.0383	1.01254	1.025
8. मुझे अपनी शैक्षणिक गतिविधियों में सफल होने की अपनी क्षमता पर पूरा विश्वास है।	600	4.0533	1.08587	1.179
9. मेरी शैक्षणिक उपलब्धियाँ मेरी व्यक्तिगत आकांक्षाओं और लक्ष्यों के अनुरूप हैं।	600	4.0533	0.98596	0.972
10. मुझे अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों पर गर्व है और मैं निरंतर सुधार के लिए प्रयासरत हूँ।	600	4.1167	0.94580	0.895

इस तालिका में हरियाणा राज्य के कक्षा 11 वीं के 600 छात्रों द्वारा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक प्रश्न के लिए माध्य, मानक विचलन और श्रेणी का विवरण दिया गया है।

तालिका में हरियाणा राज्य के कक्षा 11 वीं के 600 छात्रों द्वारा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। छात्रों ने अपने शैक्षणिक प्रदर्शन को लेकर सामान्य रूप से सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित किया है। ''मैं अपने वर्तमान शैक्षणिक प्रदर्शन से संतुष्ट हूँ'' वाले प्रश्न का माध्य 4.0433 है, जो दर्शाता है कि अधिकांश छात्र अपने प्रदर्शन से संतुष्ट हैं। इसी तरह, ''मेरी शैक्षणिक उपलब्धियां मेरे प्रयासों और क्षमताओं को प्रतिबिंबित करती हैं'' का माध्य 4.0200 है, जो यह संकेत करता है कि छात्र अपने प्रयासों और क्षमताओं के प्रति आश्वस्त हैं। सबसे अधिक सकारात्मक उत्तर ''मैं अपनी शिक्षा को बढ़ाने के लिए कक्षा चर्चाओं और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता हूँ'' वाले प्रश्न में पाया गया, जिसका माध्य 4.1600 है, जो छात्रों की सक्रिय भागीदारी को दर्शाता है। ''मैं अकादमिक उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने हेतु प्रेरित महसूस करता हूँ'' (माध्य 4.0633) और ''मुझे अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों पर गर्व है और मैं निरंतर सुधार के लिए प्रयासरत हूँ'' (माध्य 4.1167) वाले बयानों में भी छात्रों की उच्च प्रेरणा और गर्व का प्रदर्शन हुआ। हालांकि, ''मैं अपने लिए शैक्षणिक रूप से चुनौतीपूर्ण लक्ष्य निर्धारित करता हूँ (माध्य 4.0167) और ''मुझे अपने शैक्षणिक प्रदर्शन के संबंध में शिक्षकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है'' (माध्य 4.0350) जैसे प्रश्नों में थोड़ी कम सकारात्मकता देखी गई। मानक विचलन के आधार पर, अधिकांश उत्तरों में मध्यम से कम विविधता रही, जो यह दर्शाता है कि छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों के प्रति धारणा में अधिकतर समानता है। इस तालिका से पता चलता है कि अधिकांश छात्र अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों को लेकर आत्मविश्वास और संतुष्टि महसूस करते हैं, साथ ही वे अपने प्रदर्शन में सुधार के लिए लगातार प्रयासरत हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष

इस अध्ययन के निष्कर्ष हरियाणा राज्य के 11वीं कक्षा के छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाली बहुआयामी गतिशीलता की एक व्यापक समझ प्रदान करते हैं। विश्वसनीयता, वर्णनात्मक सांख्यिकी, आवृत्ति विश्लेषण और परिकल्पना परीक्षण के गहन विश्लेषण से प्राप्त की गई अंतर्दृष्टि, छात्रों के परिणामों को आकार देने वाले व्यक्तिगत, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों के जटिल परस्पर क्रियाओं पर प्रकाश डालती है।

विश्वसनीयता विश्लेषण ने नैतिक मूल्यों, आत्म–अवधारणा, शैक्षणिक चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि के लिए क्रोनबैक के अल्फा मान 0.9 से अधिक होने के साथ अध्ययन के माप उपकरणों की मजबूत आंतरिक स्थिरता को रेखांकित किया। यह उच्च विश्वसनीयता गुणांक निर्माणों की विश्वसनीयता को और मजबूत करता है।

वर्णनात्मक आँकड़े छात्रों के दृष्टिकोण और धारणाओं का गहन चित्रण प्रस्तुत करते हैं, जिसमें नैतिक मूल्यों, आत्म–अवधारणा के विभिन्न स्तरों, शैक्षणिक चिंता की व्यापकता और शैक्षणिक उपलब्धि के प्रति समग्र संतोष पर मजबूत सहमति दिखाई देती है। ये निष्कर्ष छात्रों की भलाई और शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करने वाले कारकों की गहरी समझ प्रदान करते हैं और सकारात्मक शैक्षणिक दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

आवृत्ति विश्लेषण से कक्षा 11 वीं के छात्रों के बीच जनसांख्यिकीय विशेषताओं और शैक्षणिक दृष्टिकोण का व्यापक अवलोकन प्राप्त होता है, जिसमें संतुलित लिंग वितरण, आयु जनसांख्यिकी, शैक्षणिक धाराओं का प्रतिनिधित्व और डिजिटल संसाधनों तक पहुंच की असमानताएं उजागर होती हैं।

इन अंतर्दृष्टियों से स्पष्ट होता है कि प्रणालीगत असमानताओं को दूर करना और सभी छात्रों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करना कितना महत्वपूर्ण है।

परिकल्पना परीक्षण ने शैक्षणिक चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंधों को उजागर किया, जिससे शैक्षणिक परिणामों पर तनाव के हानिकारक प्रभावों पर जोर दिया गया। लिंग–विशिष्ट विश्लेषण से छात्राओं के बीच नैतिक मूल्यों/आत्म–अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच मजबूत सह–संबंध का पता चला, जो लिंग–संवेदनशील शैक्षिक हस्तक्षेप की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

प्रतिगमन विश्लेषण ने शैक्षणिक उपलब्धि पर आत्म–अवधारणा और शैक्षणिक चिंता के प्रभाव को और भी मजबूती से प्रमाणित किया, जिससे छात्रों के मनोवैज्ञानिक कल्याण और मुकाबला तंत्र को समर्थन देने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की अनिवार्यता स्पष्ट होती है। शैक्षणिक चिंता के विभिन्न स्तरों पर तुलनात्मक अध्ययन ने छात्र परिणामों पर तनाव के विभिन्न प्रभावों की सूक्ष्म अंतर्दृष्टि प्रदान की, जिससे छात्रों की व्यक्तिगत समर्थन आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए रणनीतियों का मार्गदर्शन हुआ।

शैक्षणिक उपलब्धि पर लिंग–आधारित और स्ट्रीम–विशिष्ट विविधताओं की जांच करने वाली परिकल्पनाओं ने शैक्षिक समानता को बढ़ावा देने के लिए असमानताओं और अवसरों को उजागर किया। अध्ययन ने अकादमिक धाराओं और जनसांख्यिकीय समूहों में प्रदर्शन की जांच करके विशिष्ट छात्र आबादी के लिए लक्षित हस्तक्षेपों की आवश्यकता को पहचाना, जिससे शैक्षणिक सफलता के लिए एक अनुकूल और समावेशी शिक्षण वातावरण सुनिश्चित हो सके।

निष्कर्ष

अंत में, यह अध्ययन न केवल शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की जटिलताओं को स्पष्ट करता है, बल्कि शिक्षकों, नीति निर्माताओं और हितधारकों के लिए कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है। प्रणालीगत असमानताओं को संबोधित करके, सकारात्मक शैक्षणिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर और छात्रों के मनोवैज्ञानिक कल्याण का समर्थन करके, शैक्षिक हस्तक्षेपों को छात्र परिणामों को बेहतर बनाने और समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है। छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के निरंतर प्रयास अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और प्रत्येक शिक्षार्थी की पूरी क्षमता का पोषण करने में सहायक होंगे।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. पटेल, आर. (2020). मोरल एजुकेशन एंड एकेडमिक सक्सेस. नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशंस।
2. ब्राउन, ई. (2018). 'द रोल ऑफ ग्रोथ माइंडसेट इन एकेडमिक अचीवमेंट' साइकोलॉजी टुडे, 32(2), 135–150।
3. कार्टर, एस., और मिलर, डी. (2019). 'सेल्फ–डिसिप्लिन एज ए प्रेडिक्टर ऑफ एकेडमिक सक्सेस' एजुकेशनल साइकोलॉजी जर्नल, 41(4), 313–329।
4. जॉनसन, एम. (2016). सेल्फ–रेगुलेशन इन एकेडमिक सेटिंग्स. लंदन : रूटलेज।
5. ड्वेक, सी. (2006). माइंडसेट : द न्यू साइकोलॉजी ऑफ सक्सेस. न्यूयॉर्क : रैंडम हाउस।
6. बर्कोविट्ज, एम. डब्ल्यू., – बीयर, एम. सी. (2005)। ''व्हाट वर्क्स इन कैरेक्टर एजुकेशन : ए रिसर्च–ड्रिवेन गाइड फॉर एजुकेटर्स।'' जर्नल ऑफ मोरल एजुकेशन, 34(1), 29–48।
7. लिकना, टी. (1991)। एजुकेटिंग फॉर कैरेक्टर : हाउ आवर स्कूल्स कैन टीच रिस्पेक्ट एंड रिस्पॉन्सिबिलिटी। न्यूयॉकरू बैंटम बुक्स।
8. डकवर्थ, ए. एल., – सेलिगमैन, एम. ई. (2005)। ''आत्म–अनुशासन किशोरों के शैक्षणिक प्रदर्शन की भविष्यवाणी करने में आईक्यू से आगे है।'' जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 97(2), 208–222।
9. टैंगनी, जे. पी., बौमीस्टर, आर. एफ., – बून, ए. एल. (2004)। ''उच्च आत्म–नियंत्रण अच्छे समायोजन, कम विकृ ति, बेहतर ग्रेड और पारस्परिक सफलता की भविष्यवाणी करता है।'' साइकोलॉजिकल साइंस, 15(12), 829–832।
10. कुमार, एस. (2015). हायर एजुकेशन इन हरियाणा : चौलेंजेस एंड प्रोस्पेक्ट्स. अभिनव पब्लिकेशंस, न्यू दिल्ली, इंडिया, पृष्ठ 45–49।
11. शर्मा, पी. (2018). रोल ऑफ प्राइवेट इंस्टिट्यूशंस इन इंडियन एजुकेशन. राजस्थान यूनिवर्सिटी प्रेस, जयपुर, इंडिया, पृष्ठ 112–115।
12. गुप्ता, एन. (2020). इम्पैक्ट ऑफ गवर्नमेंट स्कीम्स ऑन एजुकेशन इन हरियाणा. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 45(3), 67–71. नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (NCERT), न्यू दिल्ली, इंडिया,
13. सिंह, आर. (2019). टेक्निकल एजुकेशन एंड स्किल डेवलपमेंट इन हरियाणा. पंजाब यूनिवर्सिटी प्रेस, चंडीगढ़, इंडिया, पृष्ठ 78–83।
14. राय, एस. (2021). इंडस्ट्री–अकैडेमिया कोलैबोरेशन इन हरियाणा एजुकेशन सिस्टम. स्प्रिंगर, न्यू दिल्ली, इंडिया,
15. वर्मा, ए. (2022). द डिजिटल रेवोल्यूशन इन हरियाणा एजुकेशन. हरियाणा यूनिवर्सिटी प्रेस, कुरुक्षेत्र, इंडिया, पृष्ठ 94–98।
16. शर्मा, पी. (2018). रोल ऑफ प्राइवेट इंस्टिट्यूशंस इन इंडियन एजुकेशन. राजस्थान यूनिवर्सिटी प्रेस, जयपुर, इंडिया, पृष्ठ 112–115।